KHAN GLOBAL STUDIES
KGS Campus, Sai Mandir, Musallahpur Hatt, Patna - 6
Mob : 8877918018, 875735880

# Geography

# अभ्यास प्रश्न #

Q. भारत में वनस्पतियों के वर्गीकरण को स्पष्ट करते हुए वन संसाधन के महत्व को स्पष्ट करें।

Q.2 भारत में सदाहरित वनस्पतियों के वितरण को स्पष्ट करते हुए। इन वनस्पतियों से सम्बंधित प्रमुख समस्याओं तथा उसके समाधान की चर्चा करें। (२००शब्द, 12.5 marks)

# वनस्पतियाँ #
(Vegetation)

- वनस्पति या वन मानव के लिए एक महत्वपूर्ण संसाधन है क्योंकि वनों के द्वारा प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में मानव की कई आवश्यकताओं को पूरी करता है जैसे:

- प्रत्यक्ष लाभ :

i) वनो से फल की प्राप्ति।
ii) जलाने हेतु लकड़ी की प्राप्ति।
iii) वनो से साँस लेने के लिए ऑक्सीजन की प्राप्ति।
iv) औषधियाँ भी मिलती है।
v) युद्ध वातावरण की प्राप्ति।
vi) संस्कृति को संरक्षण।
vii) जैविक संसाधन

- अप्रत्यक्ष लाभ :

i) जलवायु परिवर्तन को रोकने में सहायक।
ii) मानव को ऑक्सीजन प्रदान करता है।
iii) तापमान रोकने में सहायक।
iv) मृदा अपरदन, जैसी समस्याओं को रोकने में सहायक।
v) लीचिंग, लवणीकरण की समस्या को रोकने में सहायक
vi) भौमजल रिचार्ज करने में सहायक।

# भारत में वन की स्थिति #

- State forest Report (राज्य वन रिपोर्ट)
- भारत वन रिपोर्ट 2019 : वन क्षेत्र में वृद्धि
- कुल वन और वृक्ष क्षेत्र – 8,07,276 $km^2$
- कुल भौगोलिक क्षेत्र का – 24.56%
- 2017 में कुल वन और वृक्ष क्षेत्र – 8,02,088 $km^2$
- कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, केरल, जम्मू-कश्मीर और हिमाचल में सबसे ज्यादा वृद्धि दर्ज।
- भारत के कुल भौगोलिक क्षेत्र का 24.39%
- दो साल में हरित क्षेत्र में 5,188 वर्ग कि.मी. की वृद्धि।
- 2019 में कुल वन क्षेत्र – 7,12,249 वर्ग कि.मी.
- वन क्षेत्र कुल भौगोलिक क्षेत्र का 21.67% है।
- व वृक्ष आच्छादन 95,027 वर्ग कि.मी. है।
- वृक्ष आच्छादन कुल भौगोलिक क्षेत्र का 2.89% है।
- वन क्षेत्र में दो साल में 3976 वर्ग कि.मी. की वृद्धि।

KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR
Forest Report
Reference

# पर्यावरण को बेहतर बनाने की जरूरत #

- पर्यावरण संतुलन के लिए 33% भू-भाग का वनों से घिरा होना जरूरी है।
- भारत के 15 राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों में 33% से ज्यादा भू-भाग पर जंगल।
- भारत वन क्षेत्र के मामले में 10 सर्वोच्च देशों में शामिल है।
- भारत का घनत्व 9 देशों के जन घनत्व के मुकाबले काफी ज्यादा।
- भारत का जन घनत्व 382 व्यक्ति प्रति वर्ग कि०मी०, जबकि शामिल देशों का 150 व्यक्ति प्रति वर्ग कि०मी०।

# भारतीय वन अधिनियम #

- प्रावधान :
- भारतीय जंगलों के संरक्षण के लिए अधिनियमित किया गया है।
- आरक्षित वन, ग्रामीन वन, संरक्षित वन या निजी मालिकों के जंगल।
- धारा 30 के तहत वनों को नुकसान पहुँचाना दण्डनीय अपराध है।
- वृक्षों को काटना, उसके चारों ओर खाई बनाना, वृक्ष की शाखा को काटना अपराध है।
- एक अवधि के लिए कारावास या एक हजार रूपए तक जुर्माना या दोनों।
- 2017 में भारतीय वन अधिनियम 1927 में संसोधन किया गया।
- संसोधन में गैर-वन क्षेत्रों में उगाये जा रहे बांस को वृक्ष के दायरे से बाहर कर दिया गया।
- बांस की कटाई के लिए और परिवहन के लिए अब परमिट की जरूरत नहीं।

KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

# भारत में वनस्पतियों का वर्गीकरण #

i) सदाहरित वनस्पतियां
ii) पर्णपाती वनस्पतियाँ
iii) मैंग्रोव वनस्पतियाँ
iv) मरुस्थलीय वनस्पतियाँ
v) शंकुधारी वनस्पतियाँ
vi) हिमालयन प्रदेश की वन

## i) सदाहरित वनस्पतियाँ :

- ये वनस्पतियाँ उन प्रदेशों में पाई जाती है। जहाँ अत्यधिक वर्षा होती है। भारत के जिन प्रदेशों में 200 सेमी॰ से अधिक वर्षा होती है। उन प्रदेशों में सदाहरित वनस्पतियों की उपस्थिति है। भारत में पश्चिमी घाट तथा उत्तरी-पूर्वी राज्यों में वर्षा की अधिकता के कारण सदाहरित वनस्पतियों की उपस्थिति है।
- इन वनस्पतियों की निम्नलिखित विशेषताएँ है-
  i) ये वनस्पतियां अत्यन्त ही सघन वनस्पतियों का उदाहरण है। जहां किसी छोटे से प्रदेश में वृक्षो की कई प्रजातियाँ का निवास होता है।
  ii) वृक्षो के बीच सूर्य के प्रकाश हेतु कठिन प्रतिस्पर्धा होती है। अतः वृक्ष लम्बे-लम्बे और कठोर लकड़ी वाले होते है। इन वृक्षों का ऊपरी भाग छतरीनुमा होता है।
  iii) सतह पर सूर्य के प्रकाश के अनुपस्थिति के कारण अंधेरा होता है तथा वर्षा का जल हवाई सरिता के रूप में प्रवाहित होता है।
  iv) इन वनस्पतियों में वृक्षों की कई प्रजातियों के साथ-साथ पक्षियों, जंतुओं इत्यादि की भी कई प्रजातियाँ विद्यमान होती है। अतः जैव विविधता के केन्द्र होते है।
  v) सदाहरित वन पारिस्थितिकी तंत्र की उत्पादकता अधिक होती है।

KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform © KHAN SIR ©

vi) भारत का पश्चिमी घाट मुख्यतः शोला वन के लिए प्रसिद्ध है। साथ ही साथ यह क्षेत्र मानवीय गतिविधियों का भी केन्द्र है। अतः इस प्रदेश में कई स्थानिक प्रजातियाँ विलुप्ति की कगार पर है। इस प्रकार यह क्षेत्र पारिस्थितिकी के दृष्टिकोण से अत्यंत ही संवेदनशील क्षेत्र के रूप में जाना जाता है।

vii) पारिस्थितिकी तथा जैव विविधता के संरक्षण हेतु इस प्रदेश को जैव विविधता हॉट-स्पॉट के रूप में जाना जाता है।

viii) उत्तरी-पूर्वी राज्यों में अगरवूस, महोगिनी, रोजवुड़ इत्यादि महत्वपूर्ण है। उत्तर-पूर्वी राज्यों में झूम कृषि काफी समय तक प्रचलन में थी। साथ ही साथ लगातार निर्वनीकरण के कारण जैव-विविधता का ह्रास भी हुआ है। अतः जैवविविधता के संरक्षण के दृष्टिकोण से इस प्रदेश को जैव विविधता हॉट-स्पॉट बनाया गया है।

2) पर्णपाती वनस्पतियाँ :

- भारत के अधिकांश प्रदेश में पर्णपाती वनस्पतियों की उपस्थिति है। ये वनस्पतियाँ उन प्रदेशो की विशेषताएँ जहाँ किसी विशेष मौसम में वर्षा होती है अर्थात् वर्ष के किसी न किसी मौसम में वर्षा नहीं होती है तथा वनस्पतियों को जल प्रभाव का सामना करना पड़ता है।
- जिसके कारण वनस्पतियाँ किसी विशेष मौसम में अपनी पत्तियों को गिरा देती है। इसलिए इसे पर्णपात कहा जाता है।
- ये वनस्पतियाँ पंजाब, हरियाणा, उत्तर-प्रदेश, उत्तराखण्ड, दिल्ली, मध्य प्रदेश, बिहार, झारखंड, मेघालय, त्रिपुरा, राजस्थान, गुजरात, गोवा, चण्डीगढ़, छत्तीसगढ़, तमिलनाडु, कर्नाटक, केरल, महाराष्ट्र आदि राज्यों में इसका विस्तार है।
- पर्णपाती वनस्पतियों को उष्णकटिबंधीय आर्द्र पर्णपाती तथा शुष्क पर्णपाती में वर्गीकृत किया जाता है। शुष्क पर्णपात वनस्पतियाँ उन प्रदेशो में पायी जाती है, जहाँ 60-80 cm तक वर्षा होती है।

- इसके विपरीत आर्द्र पर्णपाती वनस्पतियां सामान्यतः उन प्रदेशों में पाई जाती है जहां औसत वार्षिक वर्षा 150cm के आस-पास है।
- पर्णपाती वनस्पतियां सदाहरित वनस्पतियाँ की अपेक्षा कम सघन होती है साथ ही साथ वृक्षों की प्रजातिया भी कम होती है।
- सहतूत, शीशम, सागौन, महुआ, जामुन इत्यादि प्रमुख वृक्ष है।
- पर्णपाती वनों से इमारती लकड़ी प्राप्त होती है। अतः लकड़ी की प्राप्ति हेतु इन वनस्पतियों का दोहन अधिक हुआ है।
- साथ ही साथ कृषि भूमि के विस्तार परिवहन उद्योग के इत्यादि के निर्माण के कारण भी पर्णपाती वनस्पतियों का व्यापक निर्वनीकरण हुआ है। अतः इन प्रदेशों में मृदा अपरदन की समस्याएं बढ़ी है। साथ ही साथ कई पर्यावरणीय समस्याएं भी पैदा हुई है।

# अभ्यास प्रश्न #

Q. मैंग्रोव वनस्पतियों के महत्व की चर्चा करते हुए इन वनस्पतियों के ह्रास के प्रमुख कारणों की चर्चा करें।

# मैन्ग्रोव वनस्पतियाँ #

- मैंग्रोव वनस्पतियाँ ऐसी वनस्पतियाँ है जो स्वच्छ जल की तुलना में खारे जल में तेजी से विकसित होती है। ये वनस्पतियाँ आर्द्रभूमियों या नम भूमियों पर अधिकांशतः पायी जाती है।
- भारत में ये वनस्पतियाँ तटवर्ती प्रदेशों में उपस्थित है। गुजरात, केरल, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, उड़ीसा, पश्चिम बंगाल इत्यादि प्रदेशों में ये वनस्पतियाँ पायी जाती है।
- इन वनस्पतियों की प्रकृति सदाहरित की होती है। क्योंकि इन वनस्पतियों को पूरे वर्ष जल प्राप्त होता रहता है।

KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

- मैंग्रोव वनस्पतियाँ, काली मैंग्रोव, लाल मैंग्रोव, सफेद मैंग्रोव तथा बेटनवुड़ मैंग्रोव के रूप में पायी जाती है। बेटनवुड़ झाड़ियों का उदाहरण है।
- तटवर्ती प्रदेशों से आन्तरिक भागो की तरफ मैंग्रोव वनस्पतियों की ऊँचाई बढ़ती जाती है।
- मैंग्रोव वनस्पतियाँ तटवर्ती प्रदेशों में सुनामी, चक्रवात, सागरीय तरंगो इत्यादि के प्रभाव को कम करती है।
- मैंग्रोव वनस्पतियां तटवर्ती प्रदेशों में निवास करने वाले लोगों की आजीविका का प्रमुख स्त्रोत है। इन वनस्पतियों से जहाँ एक तरफ लकड़ी की प्राप्ति होती है वहीं दूसरी तरफ औषधियों की भी प्राप्ति होती है।
- मैंग्रोव वनस्पतियां जल को स्वच्छ करती है। (गाद को रोक कर) तटवर्ती प्रदेशों में अपरदन को कम करती है।
- बंगाल की खाड़ी में गंगा नदी के डेल्टा में उपस्थित सुन्दरी वृक्ष मैंग्रोव वनस्पतियों का ही उदाहरण है। इन वृक्षो के कारण ही गंगा का डेल्टा सुन्दरवन का डेल्टा कहलाता है।
- मानव के विभिन्न आर्थिक गतिविधियों, नये-नये सागरीय मार्गो के निर्माण इत्यादि के कारण मैंग्रोव वनस्पतियों का विनाश हो रहा है। जो कि तटीय पारिस्थितिकी हेतु नकारात्मक है।

# मानवीय गतिविधियों के कारण मैंग्रोव वनस्पति का ह्रास #

i) लकड़ी प्राप्ति हेतु वृक्षो की कटाई
ii) तटवर्ती प्रदेशो में मत्स्यन के लिए मैंग्रोव का ह्रास
iii) सागरो में नये-नये जलीय मार्गो का निर्माण
iv) मानवीय गतिविधियों के कारण आर्द्र भूमियों का सूखना/ सिमटना/ संकुचित होना।
v) औषधियों की प्राप्ति हेतु मैंग्रोव का विदोहन
vi) नए-नए बंदरगाहो की स्थापना।

# संरक्षण के उपाय #

i) तटवर्ती प्रदेशों का संरक्षण।
ii) आर्द्र भूमि का संरक्षण।
iii) सतत विकास की संकल्पना को लागू करना।
iv) मैंग्रोव वनो की पुर्नस्थापना का प्रयास।

## ★ मरुस्थलीय वनस्पतियाँ ★

- भारत में मरुस्थलीय वनस्पतियाँ राजस्थान के मरुस्थल तथा लद्दाख के मरुस्थल में पाई जाती है तथा कटीली वनस्पतियाँ, नीलगिरी तथा पश्चिमी घाट की पहाड़ियों के वृष्टि छाया प्रदेशों में उपस्थित है।
- ये वनस्पतियाँ सामान्यतः उन क्षेत्रों में पाई जाती है जहां वर्षा की कमी के कारण जल का अभाव होता है।
- जल की कमी को पूरा करने के लिए इन वनस्पतियों के पास विशेष गुण पाये जाते है-
  i) इन वृक्षो की जड़े गहरी होती है।
  ii) पत्तियाँ छोटी होती है।
  iii) तनो के चारों तरफ कांटो का विकास होता है।
  iv) मोटी छाल पाई जाती है।
  v) कैक्टस या नागफनी, बबुल, बेर इत्यादि प्रमुख वृक्ष है।

## ★ शंकुधारी वनस्पतियाँ ★

KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR